आमुख कथा

सृष्टि को किसने बनाया?

प्रश्न : ओशो, इस संसार की उत्पत्ति की घटना किस प्रकार घटी? पृथ्वी पर पहले पुरुष आया कि पहले स्त्री? कृपया हम अज्ञानियों को विस्तारपूर्वक समझाइये!

एच.एल.जोगन!

तुमने तो सोचा होगा कि बड़ा दार्शनिक प्रश्न पूछ रहे हो। यह दार्शनिक प्रश्न नहीं है, यह बहुत बचकाना प्रश्न है। ये छोटे-छोटे बच्चों की बातें हैं।

अगर कोई तुमसे कह भी दे कि संसार की घटना यूं घटी, तो तुम पूछोगे कि यूं ही क्यों घटी! और तरह क्यों न घटी? कोई कहे कि संसार परमात्मा ने बनाया, तो प्रश्न का हल हो जायेगा? तुम पूछोगे, 'क्यों बनाया? किसलिए बनाया? क्या परमात्मा लोगों को कष्ट देना चाहता है, दुख देना चाहता है? क्यों बनाया?'

और धर्मगुरु तो कहते हैं कि ससांर से मुक्त होना है, भवसागर से मुक्त होना है—और यह परमात्मा क्या अधार्मिक है, जो संसार बनाता है? परमात्मा संसार बनाता है; महात्मा समझाते हैं, संसार से मुक्त होना है! कौन सच्चा है? महात्माओं की सुनें, कि परमात्मा की मानें?

और फिर परमात्मा इतने दिन क्या करता रहा! संसार नहीं बनाया होगा, फिर एक दिन बना दिया एकदम! एकदम झक आ गई; क्या हुआ! किस कारण झक आयी? भांग पी गया था? भांग कहां से आयी?

सवाल पर सवाल उठते चले आयेंगे। इससे कुछ हल नहीं होगा। ये बच्चों जैसी बातें हैं। इसमें दर्शन कुछ भी नहीं है। मगर बहुत से लोग इन्हीं बातों को दार्शनिक ऊहापोह समझते हैं! यह शेखचिल्लियों की बकवास है। इसमें मत पड़ो।

'यह गाय और बछड़ा किसका है?' पुलिस वाले ने गांव वालों से पूछा।

'गाय का पता नहीं साहब, पर बछड़ा किसका है, यह बता सकता हूं'—एक बच्चे ने कहा।

'किसका है?'

बच्चे ने कहा, 'गाय का! गाय किसकी है यह मुझे पता नहीं!'

एक गांव में चोरी हो गई। बहुत लोगों ने खोजबीन की। पुलिस इंस्पेक्टर आये; यह हुआ, वह हुआ; पता ही न चले चोर का। आखिर गांव के लोगों ने कहा, कि 'हमारे गांव में लाल बुझक्कड़ जी रहते हैं, वे हर चीज को बूझ दें! जिसको बूझ सके न कोय—उसको लाल बुझक्कड़ तत्क्षण बूझ देते हैं। अरे, एक दफे गांव से हाथी निकल गया था। गांव वालों ने कभी हाथी देखा नहीं था; रात निकल गया। सुबह उसके पैर के चिन्ह दिखाई पड़े। बड़ी गांव में चिंता फैली कि किसके पैर हैं! इतने बड़े पैर! तो जानवर कितना बड़ा होगा!

फिर लाल बुझक्कड़ ने सुझा दिया। उसने कहा कि 'कुछ घबड़ाने की बात नहीं। अरे हरिणा चक्की पैर पर बांध कर...। सीधी-सी बात है; चक्की के निशान हैं। और उछला है, तो हरिण रहा होगा। पैर में चक्की बांध कर हरिणा उछला होय!'

'हल कर दिया मामला लाल बुझक्कड़ ने! आप क्या इधर-उधर पूछ रहे हैं; लाल बुझक्कड़ से पूछ लो!'

इंस्पेक्टर ने कहा, 'यह भी ठीक है। चलो, देखें। शायद कुछ बता दे!'

लाल बुझक्कड़ ने कहा, 'बता तो सकता हूं, मगर सबके सामने नहीं

बुद्ध जिस गांव में आते थे, पहले खबर करवा देते थे कि ग्यारह प्रश्न कोई मुझसे न पूछे। उनमें से एक प्रश्न यह भी था कि संसार की उत्पत्ति किसने की! पूछे ही नहीं कोई। क्योंकि ये बुद्धुओं के प्रश्न हैं; और बुद्ध इनके उत्तर नहीं देते

बताऊंगा। क्योंकि मैं झंझट नहीं लेना चाहता। मैं तो बता दूं फिर कल मैं मुसीबत में पड़ूं! अरे, किसने चोरी की है, मुझे मालूम है। मगर उसका मैं नाम लूं, तो फिर मेरी जान आफत में आये। मैं सीधा-साधा आदमी, मैं झंझट में नहीं पड़ना चाहता। कान में कहूंगा, एकांत में कहूंगा। और कसम खाओ कि किसी को कहोगे नहीं।'

इंस्पेक्टर ने स्वीकृति दी कि 'किसी को कहूंगा नहीं; कसम खाता हूं। मगर तुम बता तो दो भैया!'

उसको ले कर लाल बुझक्कड़ एकांत में गये, गांव के बाहर जंगल में ले गये। वे बोले कि 'अब बता दो। यहां कोई भी नहीं है। पशु-पक्षी तक नहीं हैं सुनने को!'

तो कान में फुसफुसा कर कहा कि 'मैं पक्का कहता हूं; देखो बताना मत। किसी चोर ने चोरी की है!'

इस तरह की बकवास में न पड़ो। ये छोटे-छोटे बच्चों की बातें हैं।

अध्यापक ने पूछा, 'राजेश, बताओ, सारस एक टांग पर क्यों खड़ा होता है?'

राजेश ने कहा, 'सर उसे पता है कि अगर वह दूसरी टांग उठायेगा, तो गिर पड़ेगा!'

सेठ चंदूलाल गांव में आये एक महात्मा के पास गये थे। पूछने लगे, 'महात्मा जी; क्या यह सही है कि हर व्यक्ति को मरना है?'

महात्मा ने कहा कि 'हां, यह तो निश्चित ही है। अरे, मृत्यु से कौन बचा है। सभी को मरना है। प्रत्येक मरणधर्मा है।'

चंदूलाल ने सिर खुजलाया और कहा कि 'मैं सोचता हूं कि जो व्यक्ति आखिर में मरेगा, उसे श्मशानघाट कौन ले जायेगा?'

देखते हो, कैसे-कैसे कठिन सवाल उठते हैं आदमियों के दिमाग में! यह बात तो बड़े पते की है!

एक मित्र दूसरे से कह रहा था, 'तुम्हारे उस वैवाहिक विज्ञापन का कोई जवाब आया? जिसमें तुमने छपवाया था कि एक सुंदर, सुशील और कमाऊ युवक जिंदगी में रोशनी की एक किरण चाहता है!'

दूसरे ने कहा : 'हां, आया। एक जवाब आया था—बिजलीघर के दफ्तर से!'

इस तरह के प्रश्न...! तुम पूछते हो कि 'इस संसार की उत्पत्ति की घटना किस प्रकार घटी?'

एक बात पक्की समझो कि शिवजी का धनुष मैंने नहीं तोड़ा!

मैंने नहीं बनाया यह संसार! मैं पहले ही अपने को अलग कर लेता हूं! नहीं तो लोग तरह-तरह के इल्जाम मेरे ऊपर लगाते हैं! कोई यही कहने लगे कि इसी की हरकत! कि इसी ने उपद्रव किया होगा!

तो एच.एल.जोगन, इतना मैं पक्का कह देता हूं, जितना मैं पक्का कह सकता हूं कि मैंने बिल्कुल...मेरा हाथ ही नहीं है इसमें। दूर का नाता-रिश्ता भी नहीं है इसके बनाने में। न मुझे इसके बनने में उत्सुकता है, न इसके मिटने में उत्सुकता है। जब नहीं था, तब मुझे कोई अड़चन नहीं थी। जब नहीं हो जायेगा, तब मुझे कुछ अड़चन नहीं होगी। है—तो मुझे कोई अड़चन नहीं है। मैं पूरे मजे में हूं। रहे, तो ठीक। न रहे, तो ठीक।

तुम कैसी चिंताओं में पड़े हो! और तुम सोचते हो कि इन बातों को जान लोगे; तो तुम्हारा अज्ञान मिट जायेगा? इन बातों को जान लिया, तो उससे सिर्फ इतना ही सिद्ध होगा कि तुम सच्चे ही पक्के अज्ञानी हो। ये बातें कुछ जानने की नहीं हैं।

बुद्ध जिस गांव में आते थे, पहले खबर करवा देते थे कि ग्यारह प्रश्न कोई मुझसे न पूछे। उनमें से एक प्रश्न यह भी था कि संसार की उत्पत्ति किसने की! पूछे ही नहीं कोई। क्योंकि ये बुद्धुओं के प्रश्न हैं; और बुद्ध

ध्यान का दीया जला लो, अज्ञान मिट जाता है। यह सारी जानकारी तुम्हारे अज्ञान को नहीं मिटा पायगी; अज्ञान को और बूढ़ा बना देगी। पण्डित हो जाओगे। पण्डित यानी महा अज्ञानी। पापी तो पहुंच भी जायें परमात्मा तक, पण्डित कभी नहीं पहुंचते

(ओशोधाम में एक कलाकृति)

इनके उत्तर नहीं देते। मेरे दादा मुझसे पूछा करते थे अकसर; औरों से भी पूछा करते थे। लेकिन जब उन्होंने मुझसे पूछा, तो फिर पूछना बंद कर दिया। वे पूछा करते थे कि 'अक्ल बड़ी कि भैंस?'

अब उनको कौन उत्तर दे! मुझसे एक दिन पूछ बैठे। मैंने कहा, 'भैंस।'

उन्होंने कहा, 'क्यों?'

मैंने कहा, 'क्योंकि भैंस यह सवाल नहीं पूछती! यह खुजली तुम्हारे अक्ल में ही चलती है। भैंस तो बिलकुल परमहंस दशा में है! मैं कई भैंसों के पास जा कर कई घण्टे खड़ा रहा। कोई भैंस नहीं पूछती कि अक्ल बड़ी की भैंस! अरे, भैंस को पता ही है कि हम बड़े हैं। क्या पूछना!'

फिर उसने नहीं पूछा। फिर मैं कई दफे उनसे पूछता था कि 'पूछो ना! अक्ल बड़ी की भैंस!'

वे कहते, 'तू चुप रह!'

वे मुझे कहीं नहीं ले जाते थे। वे बड़ा सत्संग करते थे; महात्माओं के पास जाते थे। वे जब भी जायें, मैं बैठा कहता था कि 'आया मैं भी!'

कहते कि 'नहीं, तुझे ले जाना नहीं। तू कुछ न कुछ उलटी-सीधी बात कह देगा!'

मैंने कहा, 'उलटी-सीधी बातें तुम लोग करते हो! मैं सीधी-सादी बात करता हूं। अब तुम यह बात पूछते हो कि अक्ल बड़ी कि भैंस! और मैंने सीधा उत्तर दे दिया कि भैंस—तो तुमको लगता है कि उलटी-सीधी बातें कर रहा हूं! अरे, आने दो, मैं भी तुम्हारे महात्मा को जरा देख आऊंगा।'

एक दफा मुझे ले गये; सिर्फ एक दफा ले गये। एक महात्मा के पास गये चे मिलने। मुझे ले गये। महात्मा की उम्र रही होगी कोई तीस साल। मेरी उम्र रही होगी मुश्किल से कोई पंद्रह साल। और मेरे दादा की उम्र रही होगी कम से कम साठ साल। महात्मा ने उनसे कहा, 'आओ बच्चा, बैठो! मैंने कहा—'ठीक!'

मेरे दादा ने मुझसे कहा, 'तुम्हें कुछ पूछना हो, तुम पहले ही पूछ लो। नहीं तो फिर गड़बड़ हो जायेगी। फिर मैं पूछ लूं।'

मैंने उनसे पूछा कि 'बच्चा, एक जवाब दो!'

महात्मा बहुत नाराज हुए। कहने लगे, 'मुझसे बच्चा कहते हो!'

मैंने कहा, 'तुम मेरे दादा को बच्चा कहते हो, हरामजादे! साठ साल की उम्र के बूढ़े को बच्चा कह रहे हो। तीस साल के तुम हो, पंद्रह साल का मैं हूं, तो कोई गणित में गलती कर रहा हूं? तुम बच्चा नहीं, महा बच्चा हो!'

मेरे दादा ने मुझे फौरन बाहर निकाला कि 'तू जा भैया! तू घर जा, और कभी मेरे साथ मत आना!'

क्या बातें पूछ रहे हो! 'सृष्टि को किसने बनाया?' जान भी लोगे, तो क्या करोगे, क्या फिर से बनाना है? एक से ही मन नहीं भरा!

अरे इतना ही जान लो कि अपना अज्ञान कैसे मिटे! यह जानने से नहीं मिटेगा। ध्यान का दीया जला लो, अज्ञान मिट जाता है। यह सारी जानकारी तुम्हारे अज्ञान को नहीं मिटा पायगी; अज्ञान को और बूढ़ा बना देगी। पण्डित हो जाओगे। पण्डित यानी महा अज्ञानी।

पापी तो पहुंच भी जायें परमात्मा तक, पण्डित कभी नहीं पहुंचते।

– ओशो
प्रेम का शिखर
पहला प्रवचन, आखिर प्रश्न